गुरू ग्रंथ साहिब

सरव मानव जाती के गुरू

बाणी गुरू गुरू है बाणी विचि बाणी अंमृतु सारे ॥(982)
बाणी ब्रहमा बेदु अथरबणु करणी कीरति लहिआ ॥(903)
वाहु वाहु बाणी निरंकार है तिस जेवडु अवरु न कोइ ॥(515)
पोथी परमेसर का थानु ॥(1226)
धुर की बाणी आई ॥ तिनि सगली चिंत मिटाई ॥(628)
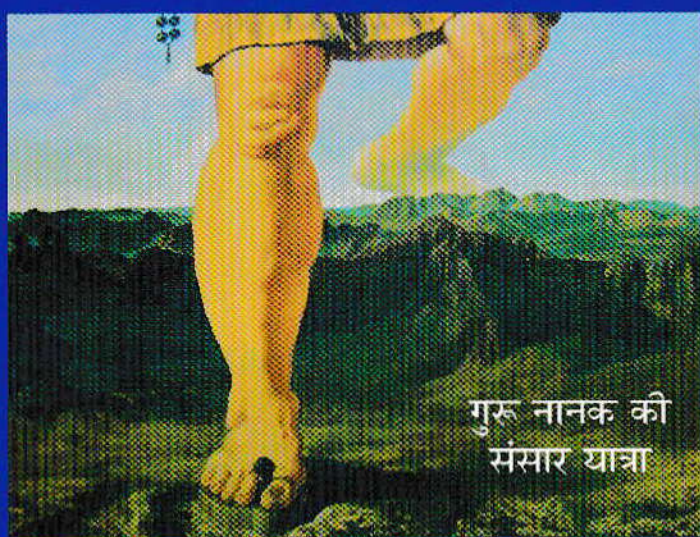
जोत रूप हरि आपि गुरू नानक कहाईऊ ॥(1408)
नानक सोधे सिम्रित बेद पारब्रहम गुर नाही भेद ॥(1142)
गुर नानक देव गोविंद रूप ॥(1192)
सभ ते वढा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥(750)

सत्य मेव जयते

गुरू रूप बाणी के इस परचे को श्रद्धा ओर इज्ज़त से रखें

गुरू गोबिंद सिंघ जी की बाणी (दसम ग्रंथ)

स्वैया ॥
पाँइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आँख तरे नहीं आनयो ॥
राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मानयो ॥
सिंमृति सासत्र बेद सभै बहु भेद कहैं हम एक न जानयो ॥
स्री असिपान कृपा तुमरी करि मै न कहयो सभ तोहि बखानयो ॥

दोहरा ॥
सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥
बाँहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥

(154) अकाल उसतत

कोउ भइओ मुंडिआ संनिआसी कोउ जोगीभइओ कोउ ब्रहमचारी कोउ जतीअन मानबो ॥
हिंदू औ तुरककोउ राफजी इमामसाफी मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥८५॥ ....
.... देहुरा मसीत सोइ पूजा औ निवाज ओइ मानस सबै एक पै अनेक को प्रभाउ है ॥
देवता अदेव जछ गंध्रब तुरक हिंदू निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥
एकै नैन एकै कान एकै बान खाक बाद आतम औ आतम औ आबको रलाओ है ॥
अलख अभेख सोइ पुरान औ कुरान ओइ एक ही
सरूप सभै एक ही बनाउ है ॥८६॥

(977) स्वैया

काहू लै पाहन पूज धरयो सिर काहू लै लिंग गरे लटकाइओ ॥
काहू लखिओ हरि अवाची[1] दिसा महि काहू पछाह[2] को सीसु निवाइओ ॥
कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ मृतान को पूजन धाइओ ॥
कूर कृआ उरझिओ सभ ही जग स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥

गुरूतेग बहादर जी की शहीदी के उपरान्त गुरूगोबिंद सिंघ जी की टिप्पणी
तिलक जंजू राखा प्रभ ताका कीनो बडो कलू मे साका ॥

1. पूरब 2. पश्चिम

९ੴ सति नामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं
गुर प्रसादि ॥

अर्थ :- भगवान एक है और सारी सृष्टि में उसका आकार है, निर्माता है, भय रहित, निरविरोध, मृत्यु रहित, अजूनी और स्वयम व्यापक है । उसकी प्राप्ति गुरू-कृपा से होती है ।

गावहु सची बाणी ॥ (918)

हिन्दुस्तानियों की मानसिक तथा समाजिक गिरावट का दृश्य : गुरू नानक की बाणी में

आसा की वार
सलोकु मः १ ॥
गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥
धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछाँ खाई ॥
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥
छोडीले पाखंडा ॥
नामि लइऐ जाहि तरंदा॥१॥ मः १ ॥
माणस खाणे करहि निवाज ॥
छुरी वगाइनि तिन गलि ताग ॥
तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥
उन्हा भि आवहि ओई साद ॥
कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥
कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥
सरम धरम का डेरा दूरि ॥
नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥
मथै टिका तेड़ि धोती

अर्थ : अपनी नौकरी करते हुए तुम गाय और ब्राह्मण को दरिया के पार लगाने का टैक्स लगाते हो, परन्तु गाय के गोबर से पोचा लगा कर ही संसार समुद्र से पार नहीं हुआ जा सकता। धोती पहनते हो, तिलक माथे पर लगाते हो और माला फेरते हो पर पदार्थ मलेच्छों का खाते हो, (पदार्थ उनसे लेकर खाते हो, जिनको तुम मलेच्छ कहते हो) । तुर्कों के सामने कुराण आदि पढ़ते हो, घर के अन्दर मूर्ति-पूजा करते हो परन्तु जीवन शैली उन जैसी ही रखी हुई है ॥। यह पाखंड तूँ छोड़ दे । प्रभु के नाम की अराधना, करने से ही संसार समुद्र से पार उतरोगे । काजी और मुस्लमान हाकम हैं रिश्वत खोर, पर पढ़ते हैं नमाज़ । गरीबों और छोटी जात वालों पर जुल्म करने वालों के गले में जनेऊ है । इन जालिमों के घर में ब्राह्मण जाकर शंख बजाते हैं, तो ही उन ब्राह्मणों को भी उन्हीं पदार्थों के स्वाद आते हैं । इन लोगों की यह पूंजी झूठी है और झूठा ही इनका यह व्यापार है । झूठ बोल-बोलकर

कखाई॥
हथि छुरी जगत कासाई ॥
नील वसत्र पहिरि होवहि
परवाणु ॥
मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥
अभाखिआ का कुठा बकरा
खाणा ॥
चउके उपरि किसै न जाणा ॥
दे कै चउका कढी कार ॥
उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥
मतु भिटै वे मतु भिटै ॥
इहु अन्नु असाडा फिटै ॥
तनि फिटै फेड़ करेनि ॥
मनि जूठै चुली भरेनि ॥
कहु नानक सचु धिआईऐ ॥
सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥
(471)

वाहिगुरू
गुर मंतर है
जप हउमै खोइ

(835) धनासरी महला १ आरती
१ਓ सतिगुर प्रसादि ॥
गगन मै थालु रवि चंदु दीपक
बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे
सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ १ ॥
कैसी आरती होइ भव
खंडना तेरी आरती ॥

ही यह रोजी कमाते हैं। अब शर्म और धर्म की सभा उठ गई है। हे नानक ! सब तरफ झूठ ही प्रधान हो गया है। यह ब्राह्मण माथे पर तिलक लगाते हैं,गेहुंए रंग की धोती बांधते हैं परन्तु हाथ में, (मानो) छुरी पकड़ी हुई है, छोटी जातों पर जुल्म करते हैं। नीले वस्त्र पहन कर तुर्कों के पास जाने की आज्ञा मिलती है। मलेच्छ से लिये हुए धन से पुराण को पूजते हैं। तुर्कों के घर में खुराक इनकी वह बकरा है जो कलमा पढ़कर हलाल किया जाता है। गोबर का पोचा लगा कर उसके आस पास लकीर लगाते हैं और यह झूठे अंदर बैठ कर पुकारते हैं कि हमारे रसोई घर में कोई ओर मनुष्य न आए। रसोई घर में वह मनुष्य बैठते हैं जो स्वयं झूठे हैं। दूसरों को कहते हैं - हमारे रसोई घर के अंदर न आना कहीं रसोई घर भ्रष्ट न हो जाए और हमारा अन्न खराब न हो जाए। परन्तु स्वयं यह लोग अपवित्र शरीर के साथ बुरे काम करते हैं और झूठे मन से ही कुर्लियां करते हैं। यहां नानक कह रहे हैं कि प्रभु की अराधना करने से ही पवित्रता हो सकती है।2।

जगन्नाथ पुरी में गुरु नानक देव जी ने जब आरती होती देखी तो यह शब्द उच्चारण किया।

अर्थ : सारा आकाश मानो थाल है, सूर्य और चन्द्रमा इस थाल में दीपक बने हुए हैं, तारों के समूह थाल में मोती रखे हुए हैं। मलय पर्वत से आने वाली हवा, मानो धूप जल रही है, हवा चवर कर रही है, सारी वनस्पति जैसे ज्योति

अनहता सबद वाजंत
भेरी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सहस तव नैन नन नैन है तोहि
कउ सहस मूरति नना एक
तोही ॥
सहस पद बिमल नन एक पद
गंध बिनु सहस तव गंध इव
चलत मोही॥२॥
सभ महि जोति जोति है
सोइ ॥
तिस कै चानणि सभ महि
चानणु होइ ॥
गुर साखी जोति परगटु होइ ॥
जो तिसु भावै सु आरती
होइ ॥ ३ ॥
हरि चरण कमल मकरंद लोभित
मनो अनदिनो मोहि आही
पिआसा ॥
कृपा जलु देहि नानक सारिंग कउ
होइ जा ते तेरै नामि
वासा ॥ ४ ॥(663)

धनासरी महला ५ गुरू अरजन देव जी
ना को मेरा दुसमनु रहिआ न हम
किस के बैराई ॥(671)

(656) सलोक मः १ ॥
जे रतु लगै कपड़ै जामा होइ पलीतु ॥
जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ
निरमलु चीतु ॥(140)

स्वरुप प्रभु की आरती के लिए फूल दे रही है ।1। हे जीवों के जन्म मरन खत्म करने वाले ! कुदरत में तेरी कैसी आरती हो रही है। सब जीवों में दमक रही एक रस जीवन बहाव मानो, तेरी आरती के लिए नगारे बजा रहे हैं।1। रहाओ। सब जीवों में व्यापक होने के कारण हजारों तेरी आंखें हैं पर, निराकार होने के कारण हे प्रभु ! तेरी कोई आंखें नहीं, हजारों तेरी शक्लें सूरतें हैं पर तेरी कोई भी शक्ल सूरत नहीं। हजारों तेरे सुन्दर पैर हैं, पर तेरा एक भी पैर नहीं। हजारों तेरे नाक हैं, लेकिन तुम नाक से रहित ही हो। तेरे इन्हीं आश्चर्यों ने मुझे हैरान किया हुआ है। 2। सारे जीवों में एक उसी प्रमात्मा की ज्योति जल रही है, उसी ज्योति के प्रकाश से सारे जीवों में प्रकाश है। लेकिन एक ज्योति का ज्ञान गुरु की शिक्षा से ही होता है। गुरु के द्वारा ही ये ज्ञान होता है कि हर एक के अन्दर प्रमात्मा की ज्योति है। इस सर्व-व्यापक ज्योति की आरती ये है कि जो भी उसकी इच्छा से हो रहा है वह जीव को अच्छा लगे ।3। तेरे चरण रुप के पास फूलों के रस के लिए मेरा मन ललचाता है, प्रति दिन मुझे इसी रस की प्यास लगी हुई है, मुझ नानक पपीहे को अपनी दया का जल दो, जिस की बरकत से मैं आपके नाम में लगा रहूं ।4।

अर्थ : गुरू साहिब कहते हैं कि न तो मेरा कोई दुशमन है और न ही हम किसी से बैर रखते हैं।

अर्थ : अगर कपडे को खून लगने से पोशाक गन्दी होती है तो गरीबों का खून चूसने वालों की आतमा कैसे पवित्र रह सकती है।

(162)

पउड़ी ॥

जा तू मेरै वलि है ता कआ मुहछंदा॥
तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥लखमी तोटि न आवई खाइ खरचि रहंदा ॥
लख चउरासीह मेदनी सभ सेव करंदा ॥
एह वैरी मित्र सभि कीतिआ नह मंगहि मंदा ॥
लेखा कोइ न पुछई जा हरि बखसंदा ॥अन्नदु भइआ सुखु पाइआ मिलि गुर गोविंदा ॥
सभे काज सवारिऐ जा तुधु भावंदा ॥ ७ ॥(1096)

अर्थ : जब आप मेरे सहायक हो, तो मुझे किसी ओर की मोहताजी नहीं रह जाती। जब मैं आपका सेवक बनता हूं तो आप मुझे सब कुछ दे देते हो, मुझे धन-धान्य की कोई कमी नहीं रहती, मैं तेरा ये नाम-धन इस्तेमाल करता हूँ, बांटता हूँ और इकट्ठा भी करता हूँ, धरती पर चौरासी लाख जीव ही मेरी सेवा करने लग जाते हैं, तू दुश्मनों को भी मित्र बना देता है, कोई भी मेरा बुरा नहीं मांगता। जब तू मुझे माफ करने वाला है तो कोई भी मुझे मेरे किए कर्मों का हिसाब नहीं पूछता, क्यों कि गोबिन्द-रुप गुरु को मिल कर मेरे अन्दर ठंडक अर्थात् शान्ति की अनुभूति होती है। मुझे सुख प्राप्त हो जाता है। जब तेरी रज़ा होती है तो सारे काम संवर जाते हैं। 7।

(185)

आसा महला ५॥

नउ निधि तेरै सगल निधान ॥
इछा पूरकु रखै निदान ॥ १ ॥
तूं मेरो पिआरो ता कैसी भूखा ॥
तूं मनि वसिआ लगै न दूखा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जो तूं करहि सोई परवाणु ॥
साचे साहिब तेरा सचु फुरमाणु ॥ २ ॥जा तुधु भावै ता हरि गुण गाउ ॥तेरै घरि सदा सदा है निआउ॥३॥ साचे साहिब अलख अभेव ॥ नानक लाइआ लागा सेव ॥ ४ ॥(३७६)

अर्थ : तेरे घर में जगत की नौ निधियां मौजूद हैं, सारे खज़ाने मौजूद हैं। तू इच्छा पूर्ण करने वाला है।1। जब तू मेरे से प्यार करने वाला है और मुझे सब कुछ देने वाला है तो मुझे कोई इच्छा नहीं रह सकती, यदि तू मेरे मन में उपस्थित रहे तो कोई दुख मुझे छू नहीं सकता।1। रहाओ। जो कुछ भी तू करता है मुझे वही कबूल है। सदा कायम रहने वाले मालिक तेरा हुक्म अटल है।2। जब आपको स्वीकार होता है तभी मैं आपकी प्रशंसा के गीत गा सकता हूँ। तेरे घर में सदा ही इन्साफ है। सदा ही इन्साफ है।3। हे सदा स्थिर रहने वाले मालिक, हे अलख और अभेद ! तेरी प्रेरणा से नानक तेरी सेवा भक्ति मे लग सकता है।4।

स्री राग महला १

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥
जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस ॥४॥(१५)

अर्थ : हे प्रभु ! मैं तुम से यही मांगता हूं कि तेरा नानक उन इन्सानों के साथ सम्पर्क बनाए जो नीची से नीची जाति के हों जो नीचों से भी अति नीच कहलाते हों, मुझे ऊंची जाति के रास्ते पर चलने की कोई चाह नहीं क्योंकि मुझे मालूम है कि तेरी कृपा की दृष्टि वहीं पर है जहां नीचों की सार ली जाती है। 4।
(नोट : जिनको ब्राह्मणों ने नीच बताया नानक उनका साथ मांगते हैं)

अनिक जतन करि कालु संताइे ॥
मरणु लिखाइि मंडल महि आइे ॥ गुरू नानक (685)

(68)

राग धनासिरी महला ३ घरु ४

१ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हम भीखक भेखारी तेरे तू निज पति है दाता ॥
होहु दैआल नामु देहु मंगत जन कंउ सदा रहउ रंगि राता ॥ १ ॥
हंउ बलिहारै जाउ साचे तेरे नाम विटहु ॥
करण कारण सभना का एको अवरु न दूजा कोई ॥ १ ॥ रहाउ॥
बहुते फेर पए किरपन कउ अब किछु किरपा कीजै ॥
होहु दइआल दरसनु देहु अपुना ऐसी बखस करीजै ॥ २ ॥
भनति नानक भरम पट खूले गुर परसादी जानिआ ॥
साची लिव लागी है भीतरि

अर्थ : हे प्रभु ! हम जीव तेरे दर के सवाली हैं तू स्वतंत्र रह कर सब को दात देने वाला है। हे प्रभु ! मेरे ऊपर दया करो। मुझ सवाली को अपना नाम दो ताकि मैं सदैव तेरे प्रेम के रंगों में रंगा रहूं।1। मैं तेरे सदा कायम रहने वाले नाम से कुर्बान जाता हूं। तू सारे जग का मूल आधार है। तू ही सब जीवों को पैदा करने वाला है। कोई और तेरे जैसा नहीं है।1। रहाओ। मेरे जैसे माया के चक्करों में फंसे हुए को अब तक जन्म मरन के अनेक चक्कर पड़ चुके हैं, अब तो मेरे ऊपर कुछ दया करो। हे प्रभु ! मेरे ऊपर दया करो। मुझ पर इतनी कृपा करो कि आप का दीदार हो जाए। 2। यहां नानक कहते हैं - गुरु की कृपा से जिस मनुष्य के भ्रमों के पर्दे खुल जाते है, उस की प्रमात्मा से गहरी सांझ अथवा अपनापन बन जाता है। उसके दिल में प्रमात्मा से सदा कायम रहने वाली लग्न लग जाती है। गुरु से उसका मन एक हो जाता है।3।

सतिगुर सिउ मनु मानिआ ॥
३ ॥ (666)

(442)

गउड़ी महला ५ माँझ ॥

दुख भंजनु तेरा नामु जी दुख भंजनु तेरा नामु ॥
आठ पहर आराधीऐ पूरन सतिगुर गिआनु ॥१॥ रहाउ ॥
जितु घटि वसै पारब्रहमु सोई सुहावा थाउ ॥
जम कंकरु नेड़ि न आवई रसना हरि गुण गाउ ॥ १ ॥
सेवा सुरति न जाणीआ ना जापै आराधि ॥
ओट तेरी जगजीवना मेरे ठाकुर अगम अगाधि ॥ २ ॥
भए कृपाल गुसाईआ नठे सोग संताप ॥
तती वाउ न लगई सतिगुरि रखे आपि ॥ ३ ॥
गुरु नाराइणु दयु गुरु गुरु सचा सिरजणहारु ॥
गुरि तुठै सभ किछु पाइआ जन नानक सद बलिहार ॥ ४ ॥
(218)

अर्थ : प्रभु तुम्हारा नाम दुखों का नाश करने वाला है । इस नाम का आठों पहर सिमरन करना चाहिए - पूरे सतगुरु का यही उपदेश है ।1। रहाओ । जिस हृदय में परमात्मा निवास करता है वह हृदय सुंदर बन जाता है । जो मनुष्य अपनी जुबान से परमात्मा के गुण गाता है, यमदूत उसके पास नहीं आता उसको मृत्यु का डर नहीं हो सकता ।1। मैं अभी तक तेरी सेवा-भक्ति की सूझ की कदर नहीं जानता, मैंने तेरे नाम की अराधना करने की नहीं सोची। हे संसार के जीवन के सहारे ! हे मेरे पावनहार मालिक ! हे प्रभु तुम तक पहुंचा नहीं जा सकता । हे बेअंत प्रभु ! पर अब मैने तेरा सहारा ले लिया है ।2। सृष्टि के मालिक प्रभु जिस मनुष्य पर दयावान होते हैं उसकी सारी चिंता और कष्ट दूर हो जाते हैं । जिस मनुष्य की गुरु स्वयं रक्षा करता है उसको शोक संताप आदि का ताप नहीं पहुंच सकता ।3। गुरु नारायण का रुप है, गुरु सब पर दया करने वाले प्रभु का स्वरुप है गुरु उस करतार का रुप है जो सदैव स्थिर रहने वाला है । अगर गुरु प्रसन्न हो जाए तो सब कुछ प्राप्त हो जाता है । नानक दास कहते हैं ! मैं गुरु से कुर्बान जाता हूँ ।4।

धनासरी महला ५

सभु को मीतु हम आपन कीना हम सभना के साजन ॥

अर्थ : हम ने सब को अपना मित्र बना लिया है और हम सब के सनेही हैं ।

> धनु जोबनु आक की छाइआ बिरधि भए दिन पुंनिआ ॥ (689)

(170)

बिलावलु महला ५ ॥

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई ॥ उगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई ॥ १ ॥
सतिगुरु पूरा भेटिआ जिनि बणत बणाई ॥ राम नामु अउखधु दीआ एका लिव लाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
राखि लीए तिनि रखनहारि सभ बिआधि मिटाई ॥
कहु नानक किरपा भई प्रभ भए सहाई ॥ २ ॥ (८१९)

अर्थ : प्रमात्मा की शरण में गए हुए को रुकावटों की तपश नहीं लगती है । हे भाई ! हम जीवों के गिर्द प्रमात्मा का नाम मानो राम जी की कार है जिस की बरकत से कोई दुख नजदीक नहीं आता ।1।

हे नानक ! जिस मनुष्य को गुरु मिल गया उसे उस रक्षक प्रभु ने बचा लिया । राम नाम की औषधि से एक प्रभु के साथ वह जुड़ गया तो उसके भीतर से हरेक रोग दूर हो गया ।रहाओ। उस मनुष्य पर प्रभु की कृपा हो गई। नानक कहते हैं प्रभु की कृपा हुई और प्रभु उस मनुष्य के मददगार बन गए ।2।

(176)

भैरउ महला ५ ॥

ऊठत सुखीआ बैठत सुखीआ ॥
भउ नही लागै जाँ ऐसे बुझीआ ॥ १ ॥
राखा एकु हमारा सुआमी ॥
सगल घटा का अंतरजामी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सोइ अचिंता जागि अचिंता ॥
जहा कहाँ प्रभु तूं वरतंता ॥ २ ॥
घरि सुखि वसिआ बाहरि सुखु पाइआ ॥
कहु नानक गुरि मंत्रु दृड़ाइआ ॥३॥
(1136)

अर्थ : हम उठते बैठते हर अवस्था में सुखी हैं, जब यह ज्ञान हो जाए तो कोई भय नहीं रहता ।1। हम जीवों का रखवाला एक मालिक प्रभु ही है । हमारा वह मालिक सब जीवों के दिल की जानता है ।1। रहाओ। मनुष्य सोते समय और जागते समय निश्चिंत है, जब उसको ज्ञान हो जाए कि जो कुछ हो रहा है वह प्रभु ही कर रहा है । हे नानक ! गुरु ने जिस मनुष्य के दिल में (यह) उपदेश पक्का कर दिया कि प्रमात्मा ही हम सब जीवों का रखवाला है वह मनुष्य अपने घर में, (भी) सुखी रहता है, वह घर से बाहर जा कर भी आनन्द प्राप्त करता है ।3।

मः १ सलोकु ॥

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥(142)

अर्थ : गुरू साहिब कहते अगर ज़िंदा रहते हुये हमारी इज्ज़त चली जाये तो हमारा खाना सब हराम है ।

> मै किआ मागउ किछु थिरु न रहाई हरि दीजै नामु पिआरी जीउ ॥१॥(597)
> गुरू नानक

(195)

आसा महला ५ ॥
अपुने सेवक की आपे राखै
आपे नामु जपावै ॥
जह जह काज किरति सेवक की
तहा तहा उठि धावै ॥ १ ॥
सेवक कउ निकटी होइ दिखावै॥
जो जो कहै ठाकुर पहि सेवकु
ततकाल होइ आवै ॥१॥रहाउ॥
तिसु सेवक कै हउ बलिहारी जो
अपने प्रभ भावै ॥
तिस की सोइ सुणी मनु हरिआ
तिसु नानक परसणिआवै ॥२॥
(403)

अर्थ : प्रमात्मा अपने सेवक की आप ही हर स्थान पर इज्ज़त रखता है । आप ही उस से नाम सिमरन करवाता है । सेवक को जहां भी जरुरत पड़े, वहां-वहां प्रमात्मा उसका कार्य सिद्ध करने उसी समय पहुंच जाता है ।1। प्रमात्मा अपने सेवक को उसके सब से नजदीक हो कर दिखा देता है कि मैं हर समय आपके साथ रहता हूं, क्योंकि जो कुछ सेवक प्रमात्मा से मांगता है वह मांग उसी समय पूरी हो जाती है ।1। रहाओ । जो सेवक अपने प्रमात्मा को प्यारा लगता है मैं उस से कुर्बान जाता हूं । उस सेवक की शोभा सुन कर सुनने वाले का मन खिल जाता है और नानक उस सेवक के चरण छूने को आता है ।2।

(188)

माझ महला ५ ॥
तूं मेरा पिता तूंहै मेरा माता॥
तूं मेरा बंधपु तूं मेरा भ्राता॥
तूं मेरा राखा सभनी थाई ता
भउ केहा काड़ा जीउ ॥ १ ॥
तुमरी कृपा ते तुधु पछाणा ॥
तूं मेरी ओट तूंहै मेरा माणा ॥
तुझ बिनु दूजा अवरु न कोई सभु तेरा
खेलु अखाड़ा जीउ ॥ २ ॥
जीअ जंत सभि तुधु उपाए ॥
जितु जितु भाणा तितु तितु
लाए ॥
सभ किछु कीता तेरा होवै नाही किछु
असाड़ा जीउ ॥ ३ ॥
नामु धिआइ महा सुखु पाइआ ॥
हरि गुण गाइ मेरा मनु
सीतलाइआ॥
गुरि पूरै वजी वाधाई नानक
जिता बिखाड़ा जीउ ॥४॥
(103)

अर्थ : तू ही मेरा पिता है । तू ही मेरी माता है । तू ही मेरे संबंधों में व्याप्त है ओर तू ही मेरा भाई है । हे प्रभु ! तू ही मेरी रक्षा करने वाला है, हर समय व हर स्थान पर, इसलिए मैं हर प्रकार के भय से ऊपर हूं ।1। तुम्हारी ही कृपा के द्वारा मैं तुम्हें पहचान पाया हूँ मुझे तुम्हारी ही ओट है और तुम्हारी विशालता के ऊपर अभिमान है । तुम्हारे बिना इस संसार में कोई नहीं है, यह अखाड़ा अथवा खेल तमाशा तुम्हारा ही रचाया हुआ है ।2। इस संसार में जो अन्नत जीव व्याप्त है वे तेरे द्वारा पैदा किए गए हैं । जहां जहां और जिस प्रकार से वे जो जो कर रहे है वो तुम्हारी इच्छा के अधीन ही हो रहा है । इसमें हमारा कुछ भी नहीं है ।3। तुम्हारा स्मरण करने के बाद मेरे सुखों में वृद्धि अथवा महासुख अथवा महा-आन्नद रस की प्राप्ति हुई । तुम्हारे गुण गाते गाते मेरा मन शीतलता से भर गया है । पूरे गुरु की कृपा से मेरे अन्दर इतना उत्साह भर गया है मानो कि ढोल बज रहा है और नानक ने अपने विकारों के साथ चल रहा द्वन्द्व युद्ध जीत लिया है ।4।

(159)

सोरठि महला ५ ॥
कोटि ब्रहमंड को ठाकुरु सुआमी
सरब जीआ का दाता रे ॥
प्रतिपालै नित सारि समालै इकु
गुनु नही मूरखि जाता रे ॥ १ ॥
हरि आराधि न जाना रे ॥
हरि हरि गुरु गुरु करता रे ॥
हरि जीउ नामु परिओ
रामदासु ॥ रहाउ ॥
दीन दइआल कृपाल सुख सागर
सरब घटा भरपूरी रे ॥
पेखत सुनत सदा है संगे मै मूरख
जानिआ दूरी रे ॥ २ ॥
हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ
किआ जाना होइ कैसो रे ॥
करउ बेनती सतिगुर अपुने मै मूरख
देहु उपदेसो रे ॥ ३ ॥
मै मूरख की केतक बात है कोटि
पराधी तरिआ रे ॥
गुरु नानकु जिन सुणिआ पेखिआ
से फिरि गरभासि न परिआ
रे ॥ ४ ॥ **(612)**

अर्थ : मुझ मूर्ख ने उस प्रमात्मा का एक भी उपकार नहीं समझा, जो करोड़ें ब्राह्मडों का पालनहार मालिक है, जो सारे जीवों को (अन्न आदि) दातें देने वाला है, जो (सब जीवों को) पालता है, सदा (सब की) सार ले कर देखभाल करता है ।1। मुझे प्रमात्मा का सिमरन करने का अभ्यास नहीं है, मैं (तो मुख से ही) 'हरी हरी' 'गुरु गुरु' करता रहता हूं । हे प्रभु जी ! मेरा नाम 'राम का दास' पड़ गया है । रहाओ । मैं मूर्ख उस प्रमात्मा को कहीं दूर रहता समझ रहा हूँ, जो गरीबों पर दया करने वाला है जो दया का भंडार है, जो सुखों का समुन्दर है, जो सभी शरीरों में हर स्थान पर मौजूद है, जो सभी जीवों के संग रह कर सभी के कर्म देखता है और सभी की प्रार्थना सुनता रहता है ।2। बेअंत हरी के गुणों को मैं सीमित कर के ब्यान करता हूँ और नहीं जानता कि हरी कैसा है मैं अपने सतगुरु से यही प्रार्थना करता हूँ कि अब तुम मुझ मूर्ख को उपदेश दो ।3। मुझ मूर्ख को पार लगाना गुरु के लिए कोई बड़ी बात नहीं उस के दर पर आ कर करोड़ों पापी संसार समुन्दर से पार हो रहे हैं। जिन मनुष्यों ने गुरु नानक (के उपदेश) को सुना है गुरु नानक का दर्शन किया है, वह फिर कभी जन्म मरन के चक्करों में नहीं पड़ते ।4।

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥

(83)

सलोक महला ३

जगतु जलन्दा रखि लै आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥
सतिगुरि सुखु वेखालिआ सचा सबदु बीचारि ॥
नानक अवरु न सुझई हरि बिनु बखसणहारु ॥१॥(८५३)

अर्थ : विकारों से जल रहे संसार को अपनी दया कर के बचा लो, जैसे भी यह बच सकता है वैसे ही बचा लो। हे नानक! सदा स्थिर प्रभु की उस्तत प्रशंसा की वाणी मन में बसा कर जिस मुनष्य को सतगुरु ने सिमरण का आत्मिक आन्नद दे दिया, उसे यह समझ आ जाती है कि प्रभु के बिन और कोई ये बख्शिस (दया) करने वाला नहीं ।1।

गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न

(760)

देवगंधारी महला ६ ॥

जगत मै झूठी देखी प्रीति ॥
अपने ही सुख सिउ सभ लागे किआ दारा किआ मीत॥ १ ॥ रहाउ ॥
मेरउ मेरउ सभै कहत है हित सिउ बाधिओ चीत ॥
अंति कालि संगी नह कोऊ इह अचरज है रीति ॥ १ ॥
मन मूरख अजहू नह समझत सिख दै हारिओ नीत ॥
नानक भउजलु पारि परै जउ गावै प्रभ के गीत ॥ २ ॥ (536)

अर्थ : दुनियां में सम्बन्धियों का प्यार मैंने झूठा ही देखा है । चाहे स्त्री हो, चाहे मित्र हो - सभी अपने अपने सुख की खातिर ही मनुष्य के साथ चलते हैं । रहाओ ।1। सभी का मन मोह से बंधा है । उस मोह के कारण हर कोई यही कहता है यह मेरा है यह मेरा है। पर अन्तिम समय में कोई भी साथी नहीं बनता जगत की यह आश्चर्यचकित मर्यादा चली आ रही है ।1। हे मूर्ख मन!तुझे मैं सदा शिक्षा दे कर थक गया हूँ। तू अभी भी समझ से काम नहीं लेता । नानक कहते हैं - जब मनुष्य प्रमात्मा की प्रशंसा के गीत गाता है तो संसार समुन्द्र से पार हो जाता है ।2।

(763)

तिलंग महला ६

जाग लेहु रे मना जाग लेहु कहा गाफल सोइआ ॥
जो तनु उपजिआ संग ही सो भी संगि न होइआ ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मात पिता सुत बंध जन हितु जा सिउ कीना ॥
जीउ छूटिओ जब देह ते डारि अगनि मै दीना ॥ १ ॥
जीवत लउ बिउहारु है जग कउ तुम जानउ ॥
नानक हरि गुन गाइ लै सभ सुफन समानउ ॥ २ ॥ (726)

अर्थ : हे मन ! होश कर, होश कर ! तू क्यों माया के मोह में बेपरवाह हो कर सो रहा है ? देख यह शरीर जो मनुष्य के साथ ही पैदा होता है, वह भी आखिर साथ नहीं जाता ।1। रहाओ । हे मन! देख माता, पिता, पुत्र, रिश्तेदार जिन से मुनष्य सारी जिन्दगी प्यार करता रहता है, जब जान शरीर से जुदा होती है, तो वह सारे रिश्तेदार,उसके शरीर को अग्नि में डाल देते हैं ।1। नानक कहते हैं, हे मन ! दुनियां को तू ऐसे ही समझ कि यहां जिन्दगी तक ही मेल-जोल रहता है । वैसे ये सब स्वप्न की तरह ही है । इस लिए जब तक जीवन है प्रमात्मा के गुण गाते रहो ।2।

जपुजी साहिब

कीता पसाउ इेको कवाउ ॥

अर्थ : नानक कहते हैं कि प्रमात्मा ने एक शब्द से सरिशटी की रचना कर दी ।

(702)

सोरठि महला ६

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै॥
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै ॥ १ ॥ रहाउ॥
नह निंदिआ नह उसतति जा कै लोभु मोहु अभिमाना ॥
हरख सोग ते रहै निआरउ नाहि मान अपमाना ॥ १ ॥
आसा मनसा सगल तिआगै जग ते रहै निरासा ॥
कामु क्रोधु जिह परसै नाहनि तिह घटि ब्रहमु निवासा॥ २ ॥
गुर किरपा जिह नर कउ कीनी तिह इह जुगति पछानी ॥
नानक लीन भइओ गोबिंद सिउ जिउ पानी संगि पानी ॥ ३ ॥
(633)

अर्थ : जो मनुष्य दुखों में घबराता नहीं, जिस मनुष्य के दिल में सुखों से स्नेह नहीं, और किसी तरह का डर नहीं, जो मनुष्य सोने को मिट्टी समान समझता है उसके अंदर परमात्मा का निवास हो जाता है ।1। रहाओ । जिस मनुष्य के अंदर किसी की निंदा बुराई नहीं, किसी की जी-हजूरी नहीं जिस के अन्दर न लालच है, न प्यार है, न अभिमान है, जो मनुष्य खुशी और गम से दूर रहता है, जिस को न आदर छू सकता है, न ही अपमान, उस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है ।1। जो मनुष्य आशाऐं उम्मीदें सब त्याग देता है, दुनियां से प्यार नहीं रखता, जिस मनुष्य को न काम-वासना छू सकती है न क्रोध छू सकता है, उस मनुष्य के हृदय में परमात्मा का निवास हो जाता है ।2।

पर हे नानक ! जिस मनुष्य के ऊपर गुरु-कृपा करता है वही जीवन की यह विधि समझता है। वह मनुष्य परमात्मा से इस तरह मिल जाता है, जैसे पानी में पानी मिल जाता है ।3।

(159)

तिलंग महला ५ घरु ३ ॥
मिहरवानु साहिबु मिहरवानु ॥
साहिबु मेरा मिहरवानु ॥
जीअ सगल कउ देइ दानु ॥
रहाउ ॥
तू काहे डोलहि प्राणीआ तुधु राखैगा सिरजणहारु ॥
जिनि पैदाइसि तू कीआ सोई देइ आधारु ॥ १ ॥
जिनि उपाई मेदनी सोई करदा सार ॥घटि घटि मालकु दिला का सचा परवदगारु ॥ २ ॥
कुदरति कीम न जाणीऐ वडा वेपरवाहु ॥करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु ॥ ३ ॥
तू समरथु अकथु अगोचरु जीउ पिंडु तेरी रासि ॥ रहम तेरी सुखु पाइआ सदा नानक की अरदासि ॥ ४ ॥
(728)

अर्थ : मेरा मालिक प्रभु सदा दया करने वाला है । सदा दया करने वाला है । वह सभी जीवों को सब वस्तुओं का दान देता है । रहाओ । हे प्राणी ! तू क्यों घबराता है ? पैदा करने वाला प्रभु तेरी अवश्य रक्षा करेगा । जिस प्रभु ने तुझे पैदा किया है वही सारी सृष्टि को सहारा भी देता है ।1। हे मनुष्य ! जिस परमात्मा ने सारी सृष्टि को बनाया है वही इसकी देखभाल करता है । हर मनुष्य में बसने वाला प्रभु सभी जीवों के दिल का मालिक है । वह सदा स्थिर रहने वाला है, और, सबको पालने वाला है ।2। उस मालिक की कुदरत का मूल्य नहीं समझा जा सकता, वह सबसे बड़ा है, वह किसी पर निर्भर नहीं है । हे मानव ! जब तक तेरे शरीर में सांस चलती है तब तक उस मालिक के गुण गाता रह ।3। हे प्रभु ! तुम सब ताकतों के मालिक हो, तुम्हारे स्वरूप की व्याख्या नहीं की जा सकती, ज्ञान इन्द्रियों की सहायता से तुम तक नहीं पहुंचा जा सकता । हम जीवों का यह शरीर और जान तेरी ही दी हुई पूंजी है । जिस मनुष्य के ऊपर तेरी कृपा हो जाए उसको तेरे दर से बंदगी का सुख मिलता है । नानक की भी तेरे दर पर यही अरदास है कि तेरी बंदगी का सुख मिले ।4।

मः १

पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पंजे नाउ ॥ पहिला सचु हलाल दुइ तीजा खैर खुदाइ ॥ चउथी नीअति रासि मनु पंजवी सिफति सनाइ ॥ करणी कलमा आखि कै ता मुसलमाणु सदाइ ॥ नानक जेते कूड़िआर कूड़ै कूड़ी पाइ ॥३॥
(141)

अर्थ : तुम ने नमाज़ के पांच वक्त और पांच नाम रखे हैं । नानक कहते हैं कि पहिले का नाम सच्चाई, दूसरा हलाल की कमाई, तीसरी सब के भले की, चौथी साफ नीयत और पांचवीं खुदा की उसत्ती की । अछी-करनी का कलमा पढो तो ही मुस्लमान कहलाओगे । ऐसी नमाज़ों और कलमे के बगैर तुम झूठ के व्योपारी ही रहोगे।

(213)

भैरउ महला ५ ॥
सतिगुर मेरा बेमुहताजु ॥
सतिगुर मेरे सचा साजु ॥
सतिगुरु मेरा सभस का दाता ॥
सतिगुरु मेरा पुरखु बिधाता ॥ १ ॥
गुर जैसा नाही को देव ॥ जिसु मसतकि भागु सु लागा सेव ॥ १ ॥ रहाउ ॥
सतिगुरु मेरा सरब प्रतिपालै ॥
सतिगुरु मेरा मारि जीवालै ॥
सतिगुर मेरे की वडिआई ॥
प्रगटु भई है सभनी थाई ॥ २ ॥
सतिगुरु मेरा ताणु निताणु ॥
सतिगुरु मेरा घरि दीबाणु ॥
सतिगुर कै हउ सद बलि जाइआ ॥ प्रगटु मारगु जिनि करि दिखलाइआ ॥ ३ ॥
जिनि गुर सेविआ तिसु भउ न बिआपै जिनि गुरु सेविआ तिसु दुखु न संतापै ॥ नानक सोधे सिंमृति बेद ॥ पारब्रहम गुर नाही भेद ॥ ४ ॥ (1142)

अर्थ : मेरे सतगुरु को किसी की मोहताजी नहीं, सतगुरु की ये सदा कायम रहने वाली मर्यादा है, कि वह सदा जरुरतों से रहित है । मेरा सतगुरु सब जीवों को दातें देने वाला है । मेरा सतगुरु और सिरजनहार अकाल पुरख एक रुप है ।1। हे भाई ! मेरे सतगुरु जैसा अन्य कोई देवता नहीं है । जिस मनुष्य के माथे पर अच्छी तकदीर जाग उठे वही मनुष्य गुरु की शरण में जाता है ।1। रहाओ । सतगुरु सब जीवों की रक्षा करता है, जो मनुष्य उसके दर पर आता है, उसको माया के मोह से मार के आत्मिक जीवन दे देता है । सतिगुरु की ये ऊंची शोभा सब जगह रोशन हो गई है ।2। जिस मनुष्य का कोई भी सहारा नहीं गुरु उसका सहारा बनता है । गुरु उसके घर में सहारा बनता है । मैं उस गुरु पर सदा कुर्बान जाता हूँ जिस ने आत्मिक जीवन का सीधा रास्ता दिखला दिया है ।3। जिस मनुष्य ने सतगुरु की शरण ली है कोई डर उस पर अपना दबाव नहीं डाल सकता । कोई दुख तकलीफ उसे कष्ट नहीं दे सकती । नानक ने स्मृति वेद आदिक धर्म पुस्तक खोज कर देख लिए, गुरु सब से ऊंचा है, गुरु और प्रमात्मा में कोई भी अंतर नहीं है ।4।

(199)

धनासरी महला ५ ॥
चतुर दिसा कीनो बलु अपना सिर ऊपरि करु धारिओ ॥
कृपा कटाख्य अवलोकनु कीनो दास का दूखु बिदारिओ ॥ १ ॥
हरि जन राखे गुर गोविंद ॥

अर्थ : उस प्रभु ने चारों दिशाओं की तरफ अपना बल फैला रखा है उस कृपालु का हाथ सदा मेरे सिर के ऊपर है वह जब अपनी कृपा भरी दृष्टि से मेरी ओर देखता है तो मेरे दुखों का नाश हो जाता है ।1। परमात्मा अपने सेवकों की सदा रक्षा करता है । परमात्मा अपने सेवकों को

कंठि लाइ अवगुण सभि मेटे
दइआल पुरख बखसंद ॥ रहाउ॥
जो मागहि ठाकुर अपुने ते सोई
सोई देवै ॥ नानक दासु मुख ते
जो बोलै ईहा ऊहा सचु
होवै ॥ २ ॥(681)

दिल में स्थान देता है और उनके अवगुणों को समाप्त कर देता है।रहाओ। हम अपने प्रभु से जो कुछ भी मांगते हैं वह दे देता है । उस प्रभु का दास नानक, यदि मुख से कुछ कह दे तो वह सभी लोकों में सच हो जाता है ।2।

सलोक म: १
जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥ सिरु
दीजै काणि न कीजै ॥ (1412)

अर्थ : अगर आपको प्रभु प्रेम का खेल खेलने का शौक है, तो अपना सिर हथेली पर रख कर मेरी गली आओ । इस रास्ते पर उस समय ही कदम रखो जब बिना कोई हिचकिचाहट के तुम सिर दे सको ।

मः २ ॥
नानक दुनीआ कीआँ वडिआईआँ
अगी सेती जालि ॥ (1290)

अर्थ : नानक कहते हैं कि तुम दुनिया कि ओर से मिले हुये मान सम्मान को आग लगा दो ।

पउड़ी ॥
जिउ जिउ तेरा हुकमु तिवै
तिउ होवणा ॥ जह जह
रखहि आपि तह जाइ
खड़ोवणा ॥ नाम तेरै कै
रंगि दुरमति धोवणा ॥
जपि जपि तुधु निरंकार भरमु
भउ खोवणा ॥ जो तेरै रंगि
रते से जोनि न जोवणा ॥
अंतरि बाहरि इकु नैण
अलोवणा ॥ जिन्ी पछाता
हुकमु तिन् कदे न रोवणा ॥
नाउ नानक बखसीस मन
माहि परोवणा॥ (523)

अर्थ : हे प्रभु ! संसार में उसी प्रकार कार्य होते है जिस प्रकार आपका हुक्म होता है । जहां-जहां तुम स्वयं जीवों को रखते हो, वहीं जाकर जीव खड़े होते हैं ज़ो जीव तेरे नाम के प्यार में रहते हैं वह बुरी अक्ल धो लेते हैं, हे निरंकार ! तेरी अराधना से भटकना और डर दूर हो जाते हैं । जो मनुष्य तेरे प्यार में रंग जाते हैं वह जोनियों में नहीं पड़ते, अंदर बाहर हर जगह वह एक आप ही को आंखों से देखते है । हे नानक ! जिन्होंने प्रभु के हुक्म को पहचाना है वह कभी पछताते नहीं क्योंकि वह किसी विकार में फंसते ही नहीं, बल्कि प्रभु का नाम, नाम-रुप बख्शिश सदा अपने मन में बसाए रखते हैं ।

कानड़ा महला ५ ॥
बिसरि गई सभ ताति पराई ॥
जब ते साधसंगति मोहि
पाई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि
आई ॥ १ ॥जो प्रभ कीनो सो
भल मानिओ एह सुमति साधू
ते पाई ॥ २ ॥
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै
पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥३॥
(1299)

अर्थ : जब से मैने गुरु संगति प्राप्त की है तब से दूसरों का सुख देखकर मन ही मन जलने की सारी आदत भूल गई है ।1। रहाओ । अब मुझे कोई दुश्मन नजर नहीं आता। कोई बेगाना नहीं नजर आता । सब से मेरा प्यार बन गया है ।1। अब जो भी प्रभु करता है, मैं उसको अच्छा ही मानता हूँ । यह अच्छी समझ मैंने अपने गुरु से सीखी है ।2। नानक कहते है, एक प्रभु ही हर जीव में मौजूद है तभी तो सब को देख देख कर मैं खुश होता हूं ।3।

सूही महला ५ ॥
जिस के सिर ऊपरि तूं
सुआमी सो दुखु कैसा पावै॥
बोलि न जाणै माइआ मदि
माता मरणा चीति न
आवै ॥१॥
मेरे राम राइ तूं संता का संत
तेरे ॥ तेरे सेवक कउ भउ किछु
नाही जमु नही आवै
नेरे ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जो तेरै रंगि राते सुआमी तिन्
का जनम मरण दुखु नासा ॥
तेरी बखस न मेटै कोई सतिगुर
का दिलासा ॥ २ ॥
नामु धिआइनि सुख फल पाइनि
आठ पहर आराधहि ॥
तेरी सरणि तेरै भरवासै पंच दुसट
लै साधहि ॥ ३ ॥

अर्थ : हे मेरे मालिक ! जिस मनुष्य के सिर के ऊपर तुम अपना हाथ रख दो उसको कोई दुख नहीं सताता । वह मनुष्य माया के नशे में ग्रस्त होकर तो बोलना ही नहीं जानता, मौत का डर भी उस के हृदय में पैदा नहीं होता ।1। हे मेरे प्रभु पातशाह । तू अपने संतों का रखवाला है तेरे संत तेरे सहारे रहते हैं । तेरे सेवक को कोई डर छू नहीं सकता, मौत का डर उसके पास नहीं आता ।1। रहाओ । जो मनुष्य तेरे प्रेम रंग में रंगे रहते हैं, उनका जन्म मरण के चक्कर का दुख दूर हो जाता है, उनको गुरु का दिया हुआ यह भरोसा याद रहता है कि उन पर हुई तेरी कृपा को कोई मिटा नहीं सकता ।2। तेरे संत तेरे नाम का सिमरन करके आत्मिक आनंद लेते रहते हैं, आठों पहर तेरी आराधना करते हैं । तेरी शरण में, तेरे सहारे रह कर वह मन को भटकाने वाले पाचों दुश्मनों को पकड़ कर बस में कर लेते हैं ।3। मैं भी तेरी कृपा की

गिआनु धिआनु किछु करमु न जाणा सार न जाणा तेरी ॥
सभ ते वडा सतिगुरु नानकु जिनि कल राखी मेरी ॥ ४ ॥
(749)

कदर नहीं जानता था, मुझे आत्मिक जीवन की सूझ नहीं थी, तेरे चरणों में सुध जोड़कर लीन होना भी नहीं जानता था। पर तेरी कृपा से मुझे सबसे बड़ा गुरु नानक मिल गया है, जिस ने मेरी इज्ज़त रख ली और मुझे तेरे चरणों में जोड़ दिया।4।

(161) सवईऐ महले चऊथे के ॥
सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहगुरू तेरा सभु सदका ॥
निरंकारु प्रभु सदा सलामति कहि न सकै कोऊ तू कद का ॥
ब्रहमा बिसनु सिरे तै अगनत तिन कउ मोहु भया मन मद का ॥
चवरासीह लख जोनि उपाई रजक दीआ सभ हू कउ तद का ॥
सेवक कै भरपूर जुगु जुगु वाहिगुरू तेरा सभु सदका ॥ १ ॥ (1403)

अर्थ : हे गुरु ! तू धन्य है। तू अपने सेवकों के दिल में सदैव उपस्थित है, तेरी ही सारी कृपा है, तू निरंकार रुप है। प्रभु रुप है। सदा स्थिर है, कोई कह नहीं सकता, तू कब से है। हे गुरु तुम ने ही अनगिनत ब्रहमा व विष्णु पैदा किए हैं, और उनको अपने मन के अहंकार का मोह हो गया। तूमने ही चौरासी लाख जूनें पैदा की हैं और तू आप ही उनको खाने को रोटी देता है। हे गुरु! तु धन्य है। तू अपने सेवकों के दिल में सदैव उपस्थित है, तेरी ही सारी कृपा है।1।

महला १
कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥ (953)

अर्थ : गुरू नानाक साहिब कहते हैं कि झूठे हार जाते हैं और आखीर में सच्चाई की जीत होती है।

कूड़ु छोडि साचे कउ धावहु ॥
जो इछहु सोई फलु पावहु ॥(1028)

अर्थ : गुरू नानाक देव जी कहते हैं कि तुम झूठ छोड कर सच्चाई को अपनाओ तब तुमको वह सब मिलेगा जो तुम चाहते हो।

(196) गउड़ी महला ५ ॥
जा का मीतु साजनु है समीआ ॥
तिसु जन कउ कहु का की कमीआ ॥ १ ॥
जा की प्रीति गोबिंद सिउ लागी ॥
दूखु दरदु भ्रमु ता का भागी ॥ १ ॥ रहाउ ॥
जा कउ रसु हरि रसु है आइओ॥
सो अन रस नाही लपटाइओ ॥ २ ॥
जा का कहिआ दरगह चलै ॥
सो किस कउ नदरि लै आवै तलै ॥ ३ ॥
जा का सभु किछु ता का होइ ॥
नानक ता कउ सदा सुखु होइ ॥ ४ ॥ (१८६)

अर्थ : जिस व्यक्ति का यह विश्वास दृढ़ हो जाए कि उसका सज्जन प्रभु या मित्र-प्रभु हर जगह व्याप्त है। उस व्यक्ति को किस वस्तु विशेष की कमी रह जाएगी।1। जिस व्यक्ति का प्रेम परमात्मा के साथ बन जाता है उसका हर दुख, दर्द व वहम, भ्रम दूर हो जाता है।1। रहाओ। जो उस प्रभु परमेश्वर के नाम का आन्नद या रस प्राप्त कर ले, वह दुनियां के अन्य रसों से दूर हो जाता है।2। जिस मनुष्य की बोली हुई वाणी परमात्मा के दरबार में प्रमाणित हो, उस व्यक्ति को और किसी व्यक्ति की मोहताजी नहीं रह जाती।3। हे नानक ! यदि मनुष्य अपना सब कुछ परमात्मा को अर्पण कर दे तो वह सदा के लिए आनन्द प्राप्त कर लेता है।4।

(156) प्रभाती ॥ (कबीर)
अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ॥
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ॥ १ ॥
लोगा भरमि न भूलहु भाई ॥
खालिकु खलक खलक महि खालिकु पूरि रहिओ स्रब ठाँई ॥ १ ॥ रहाउ ॥
माटी एक अनेक भाँति करि साजी साजनहारै ॥
ना कछु पोच माटी के भाँडे ना कछु पोच कुंभारै ॥ २ ॥
सभ महि सचा एको सोई तिस का कीआ सभु कछु होई ॥
हुकमु पछानै सु एको जानै बंदा कहीऐ सोई ॥ ३ ॥

अर्थ : सब से पहले खुदा के नूर (रोशनी) ने जगत पैदा किया है, ये सारे जीव-जंतु प्रभु की कुदरत के ही बनाए हुए हैं। एक प्रभु की ज्योति से ही सारा जगत पैदा हुआ है। तो फिर किसी जाति धर्म के भ्रम में पड़ कर किसी को अच्छा और किसी को बुरा न समझो।1। प्रभु के व्यक्तित्व के बारे किसी संशय में पड़ कर भटकना मत। वह प्रभु ही सारे जगत को पैदा करने वाला है और सारे जगत में उपस्थित है। वही हर कण-कण में भरपूर है।1। रहाओ। सिरजनहार ने एक ही मिट्टी से अनेकों किस्म के जीव पैदा किए हैं, न तो इन मिट्टी के बर्तनों में कोई कमी है और न ही इन बर्तनों के बनाने वाले कुम्हार में।2। वह सदा कायम रहने वाला एक प्रभु सब जीवों में रहता है। जो कुछ जगत में हो रहा है, उसी का किया हुआ हो रहा है। वही मनुष्य प्रभु का प्यारा कहा जा सकता है, जो उसकी रज़ा को पहचानता है।3। वह प्रभु ऐसा है जिसके पूर्ण स्वरुप की व्याख्या

अलहु अलखु न जाई लखिआ
गुरि गुड़ु दीना मीठा ॥
कहि कबीर मेरी संका नासी सरब
निरंजनु डीठा ॥ ४ ॥ ३ ॥
(1349)

नहीं की जा सकती, उसके गुण कहे नहीं जा सकते । जैसे मीठा गुड़, जिसका स्वाद मैं नहीं बता सकता, लेकिन मैंने उस माया रहित प्रभु को हर जगह देख लिया है । मुझे इसमें कोई संदेह नहीं रहा कि मेरे अन्दर किसी जाति या धर्म के मनुष्यों की ऊंचाई व नीचाई का भ्रम नहीं रहा ।4।

(106)

धनासरी भगत रविदास जी की
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
हम सरि दीनु दइआलु न तुम
सरि अब पतीआरु किआ कीजै ॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन
कउ पूरनु दीजै ॥ १ ॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने ॥
कारन कवन अबोल ॥ रहाउ ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ
इहु जनमु तुमारे लेखे ॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ
चिर भइओ दरसनु देखे ॥ २ ॥
(674)

अर्थ : मेरे जैसा दीन-हीन और तुम्हारे जैसा दयालु कृपानिधान दूसरा कोई नहीं है । अब बाकी की बातें करना व्यर्थ है । तुम्हारे वचनों द्वारा ही अब मेरा मन मान जाए, इस बात का मुझे अब पूर्ण विश्वास दो ।1। मैं तेरे ऊपर से कुर्बान जाता हूँ, किस कारण तू मुझसे बात नहीं करता । रहाओ । कई जन्मों से मैं तुम्हारे वियोग में हूँ, यह जन्म तुम्हारी ही याद में बीते इसी आशा के सहारे रविदास जीवन व्यतीत कर रहा है क्योंकि तुम्हारे दर्शन किए हुए युग बीत गए हैं ।2।

सरब रोग का अउखदु नामु(२७४)

सुखमनी साहिब

अर्थ : सब किसम के सरीरिक और मानसिक रोगों का इलाज प्रभू का नाम है । रोगी मन से इन सबदों का अधियैन करें ।

(149)

नामदेव ॥
सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥ १ ॥
रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन

अर्थ : प्रत्येक घट (शरीर) में प्रभु बोलता है, प्रभु ही बोलता है, प्रभु के बिन और कोई नहीं बोलता । 1 । रहाओ । जैसे एक ही मिट्टी से कई किस्म के बर्तन बनाए जाते हैं, वैसे हाथी

हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम
घटि घटि रामु समाना रे ॥ १ ॥
एकल चिंता राखु अनन्ता अउर
तजहु सभ आसा रे ॥
प्रणवै नामा भए निहकामा को
ठाकुरु को दासा रे ॥ २ ॥(988)

से लेकर चींटी तक निर्जीव पदार्थ और सजीव जीव, कीड़े-पतंगे - हरेक में राम (प्रमात्मा) ही समाए हुए है ।1। अन्य सभी की आशा छोड़ दे । एक बेअंत प्रभु का ध्यान कर जो सभी में मौजूद है । नामदेव प्रार्थना करता है-जो मनुष्य प्रभु का ध्यान कर के निष्काम हो जाता है, उस में और प्रभु में कोई भेद नहीं रह जाता ।2।

(842)

मलार ॥
मो कउ तूं न बिसारि तू न
बिसारि ॥
तू न बिसारे रामईआ ॥ १ ॥
रहाउ॥
आलावंती इहु भ्रमु जो है मुझ
ऊपरि सभ कोपिला ॥
सूदु सूदु करि मारि उठाइओ
कहा करउ बाप बीठुला ॥ १ ॥
मूए हूए जउ मुकति देहुगे मुकति
न जानै कोइला ॥
ए पंडीआ मो कउ ढेढ कहत तेरी
पैज पिछंउडी होइला ॥२॥
तू जु दइआलु कृपालु कहीअतु है
अतिभुज भइओ अपारला ॥
फेरि दीआ देहुरा नामे कउ
पंडीअन कउ पिछवारला ॥ ३ ॥
(1292)

अर्थ : हे सुन्दर राम ! मुझे आप न भुलाना, मुझे तू न भुलाना, मुझे तू न विसारना ।1। रहाओ । इन पंडितों को यह भ्रम है कि ये ऊंची जाति वाले हैं । इस लिए ये सब मेरे से नाराज हो गए हैं । शूद्र-शूद्र कह कर और मार पीट कर के मुझे इन्होंने भगा दिया है, हे मेरे विठुल पिता इनके आगे मेरी अकेले की कोई पेश नहीं जाती ।1। अगर आपने मुझे मरने के बाद मुक्ति दे दी, आपकी दी हुई मुक्ति का किसी को पता नहीं लगेगा, यह पंडित मुझे नीच कह रहे हैं, ऐसे तो तेरी बंदगी करने वाला कोई मनुष्य नीच नहीं रह सकता है ।2। तू तो सब से ऊपर है, चाहे कोई नीच कुल का है चाहे ऊंचे कुल का है, तू दया करने वाला है, तू दया का घर है । फिर तू है भी बड़ा बलवान और बेअन्त । क्या तेरे सेवक ऊपर कोई तेरी मर्जी के बिना जबरदस्ती कर सकता है । मेरी नामदेव की प्रार्थना सुन कर प्रभु ने मन्दिर मुझ नामदेव की तरफ मोड़ दिया और पंडितों की तरफ पीठ हो गई ।3।

नोट : विठुल मूर्ति, कृष्ण जी की है, पर रहाओ की तुक में नामदेव अपने विठुल को रामईया कह कर बुलाते हैं । किसी एक अवतार की मूर्ति का पुजारी अपने ईष्ट को दूसरे अवतार के नाम से याद नहीं कर सकता । सो यहां नामदेव उसी अकाल पुरख को बुला रहे हैं जिनको राम, विठुल, मुकुन्द आदि सारे प्यारे नामों से बुलाया जा सकता है ।

तीरथ सनान के उपर गुरू नानक देव जी के विचार -

धनासरी महला १ छंत
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
तीरथि नावण जाउ तीरथु नामु है॥
तीरथु सबद बीचारु अंतरि गिआनु
है ॥ (687)

अर्थ : गुरू नानक कहते हैं कि असल तीर्थ जिस में पवित्र करने वाली शक्ति है वह हरी का नाम है । हर समय मन के अंदर हरी को याद करना ही तीर्थ-स्नान है ।

रागु गउड़ी रविदास जी के पदे
गउड़ी गुआरेरी ੴ सतिनामु
करता पुरखु गुरप्रसादि ॥
मेरी संगति पोच सोच दिनु
राती ॥ मेरा करमु कुटिलता
जनमु कुभाँती ॥ १ ॥
राम गुसईआ जीअ के जीवना ॥
मोहि न बिसारहु मै जनु
तेरा ॥ १ ॥ रहाउ ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु
सुभाई ॥ चरण न छाडउ सरीर
कल जाई ॥२ ॥
कहु रविदास परउ तेरी साभा ॥
बेगि मिलहु जन करि न
बिलाँबा ॥ ३ ॥ १ ॥ (345)

अर्थ : हे प्रभु ! दिन रात बुरे लोगों के साथ मेरा उठना बैठना है, मेरा जीवन का नित्य-कर्म भी कुटिल है, और मेरा तो जन्म भी नीच जाति में हुआ है।1। हे मेरे राम ! हे धरती के साई (मालिक) हे मेरे जीवन के सहारे! मेरे ऊपर से अपनी दृष्टि मत हटाना क्योंकि मैं तेरा ही बंदा हूँ ।1। रहाओ । हे प्रभु ! मेरी यह विपत्ति काटो, मुझ सेवक को अच्छी भावना वाला व्यक्ति बना लो, चाहे मेरे शरीर का नाश हो जाए, फिर भी मैं तेरे चरणों का आश्रय नहीं छोडूंगा ।2। रविदास कहते है, मैं तेरी शरण में हूँ, मुझे जल्दी मिलो और मिलने में विलम्ब न कर ।3।

अपरंपर पारब्रहमु परमेसरु नानक गुरु मिलिआ सोई जीउ ॥(599)

सोरठि महला १ घरु १ ॥
बाबा माइआ साथि न होइ ॥
इनि माइआ जगु मोहिआ विरला
बूझै कोइ ॥(595)

अर्थ : गुरु नानक कहते हैं कि स्पंति साथ नहीं जाती, इस धन दौलत ने आदमी को पागल बना रखा है और कोइ खुशकिस्मत ही यह सच्चाई जानता है ।

सलोक कबीर जी ॥
गगन दमामा बाजिओ परिओ
नीसानै घाओ ॥
खेतु जु माँडिओ सूरमा अब
जूझन को दाउ ॥ १ ॥
सूरा सो पहिचानीऐ जु लरै दीन
के हेत ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै कबहू न
छाडै खेतु ॥ २ ॥ (1105)

अर्थ : इस जगत रुपी रण-भूमि में दलेरी से विकारों (बुराईयों) के सामने निश्चय धार कर खड़ा होने का डंका बज गया है और ये समझ कि मनुष्य जीवन ही एक मौका है जब इनसे लड़ा जा सकता है ।1।

उस मनुष्य को ही सूरमा समझना चाहिए जो गरीबों के लिए लड़ता है । टुकड़े टुकड़े हो कर मरता है, लेकिन लड़ाई का मैदान कभी नहीं छोड़ता ।2।

फरीदा बारि पराइऐ बैसणा
साँई मुझै न देहि ॥
जे तू एवै रखसी जीउ सरीरहु
लेहि ॥ ४२ ॥ (1404)

अर्थ : हे फरीद ! दुनियां के इन पदार्थों के लिए मुझे किसी के दरवाजे पर मत बैठने देना । परन्तु अगर तुमने मुझे इसी तरह रखना है भाव ! अगर तुम ने मुझे दूसरों पर निर्भर (गुलाम) रखना है तो मेरे शरीर में से प्राण ले लो ।42।

सलोक कबीर जी ॥
कबीर अलह की करि बंदगी जिह सिमरत दुखु जाइ ॥
दिल महि साँई परगटै बुझै बलन्ती नाँइ ॥ १८६॥(1374)

कबीर मेरा मुझ महि किछु नही जो किछु है सो तेरा ॥
तेरा तुझ कउ सउपते किआ लागै मेरा ॥ २०३ ॥(1375)

कबीर तूं तूं करता तू हूआ मुझ महि रहा न हूं ॥
जब आपा पर का मिटि गइआ जत देखउ तत तू ॥ २०४ ॥(1375)

सलोक फरीद जी ॥
फरीदा गलीए चिकड़ु दूरि घरु नालि पिआरे नेहु ॥
चला त भिजै कंबली रहाँ त तुटै नेहु ॥ २४ ॥
भिजउ सिजउ कंबली अलह वरसउ मेहु ॥
जाइ मिला तिना सजणा तुटउ नाही नेहु ॥ २५ ॥(1403)

੧ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ६ ॥

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥
कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥ १ ॥
बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥
कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥ २ ॥
बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥
कहु नानक नर बावरे किउ न भजै भगवानु ॥ ४ ॥
धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥
इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥ ५ ॥
जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु रे तै मीत ॥
कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥ १० ॥
सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥
कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥ १३ ॥
उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥
कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥ १४ ॥
भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥

अर्थ : अगर तुमने परमात्मा के गुण कभी नहीं गाए तो तुमने अपना मानव जीवन बेकार कर दिया है । नानक कहते हैं कि हे मन ! परमात्मा का भजन किया करो और उसको ऐसे जिंदगी का सहारा बनाओ जैसे पानी को मछली अपनी जिंदगी का सहारा बनाए रखती है । 1 । तुम संसारिक पदार्थों में क्यों इतना मस्त रहते हो ? तुम एक क्षण के लिए भी इन पदार्थों से अपना मन नहीं हटाते । नानक कहते हैं, हे मन ! परमात्मा का भजन किया कर । भजन की बरकत से तू जन्म मृत्यु के चक्कर से बाहर आ जाएगा ।2। नानक कहते हैं, हे मूर्ख प्राणी तू क्यों परमात्मा का भजन नहीं करता ? देख, तू अब बूढ़ा हो गया है पर तुझे अब भी ये समझ नहीं आई कि मौत सिर तक आ पहुंची है ।4। नानक कहते हैं, धन दौलत, स्त्री, संपत्ति इन सब को अपना मत मान । यह बात तू समझ ले कि इन सभी में से कोई भी तेरा साथी नहीं बन सकता (परमात्मा को पाने के लिए) ।5। तू उस परमात्मा का भजन किया कर जिसके नाम की आराधना करने से ऊंची आत्मिक अवस्था प्राप्त होती है । नानक कहते हैं कि आयु लगातार कम होती जा रही है परमात्मा का नाम सिमरन मत भूल ।10। जिस मनुष्य के हृदय को सुख दुख नहीं छू सकता लोभ, मोह, अहंकार नहीं छू सकता, नानक कहते हैं वह मनुष्य परमात्मा का रुप है ।13। जिस मनुष्य का मन उसत्त निंदा से नहीं डोलता जिसको सोना और लोहा एक जैसे दिखाई देते हैं, जो लालच में नहीं आता, नानक कहते हैं यह बात अच्छी तरह जान ले कि उसको मोह से छुटकारा मिल चुका है ।14। जो मनुष्य किसी को ना तो डराता है और ना किसी का डर मानता है । नानक बताते हैं

कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥ १६ ॥
जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥
कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥ १८ ॥
जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥
कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥ २२ ॥
निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥
कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥ २४॥
माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥ २८ ॥
मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥
कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥ ३० ॥
सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥
कहु नानक हरि भजु मना अंति सहाई होइ ॥ ३२ ॥
जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥
दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥ ३४ ॥
बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥

कि उसको ज्ञानवान समझो ।16। जो मनुष्य पैसा और संसार त्याग देता है और सारे विकार छोड़ देता है, नानक कहते हैं कि उसी के हृदय में परमात्मा का निवास होता है ।18। जो मनुष्य ममता त्याग देता है, लोभ, मोह, अहंकार को दूर करता है, नानक कहते हैं कि वह स्वयं संसार समुद्र से पार हो जाता है और दूसरों को भी विकारों से बचा लेता है ।22। धन एकत्रित करने के लिए मनुष्य सदा रात-दिन भटकता रहता है । नानक के अनुसार करोड़ों मे से कोई एक ऐसा मनुष्य होता है जिसके मन में परमात्मा की याद बसी होती है ।24। मूर्ख बेसमझ इंसान केवल धन एकत्रित करने के लिए भटकते रहते हैं, नानक कहते हैं परमात्मा के भजन के बिना उनका यह जीवन व्यर्थ ही जाता है ।28। जिस मनुष्य का मन हर समय धन में लगा रहता है । जिसको परमात्मा का नाम सदैव भूला रहता है नानक कहते हैं !(बताओ) परमात्मा के भजन के बिना उसका जीवन किस काम का है ।30। दुनियां में तो सुख के समय अनेकों मित्र बेली बन जाते हैं, पर दुख में कोई भी साथ नहीं होता । नानक कहते हैं ! हे मन ! परमात्मा का भजन किया कर परमात्मा अंतिम समय में भी सहायक बनता है ।32। मैंने अनेकों (अन्य) प्रयत्न कर लिए हैं उन प्रयत्नों से मन का अभिमान दूर नहीं हुआ, यह मन बुरी बुद्धि से जुड़ा ही रहता है । हे भगवान ! तुम स्वयं ही रक्षा करो । 34 । नानक कहते हैं (हे भाई) बाल, युवा और फिर वृद्ध अवस्था जीवन की यह तीनों अवस्थाऐं समझ ले, परन्तु यह याद रहे कि परमात्मा के भजन के बिना यह सभी ही व्यर्थ चली जाती हैं ।35। नानक कहते हैं, हे भाई ! माया के लालच में फंस कर मानव प्रभु

कहु नानक हरि भजन बिनु
बिरथा सभ ही मानु॥३५॥
नर चाहत कछु अउर अउरै की
अउरै भई ॥
चितवत रहिओ ठगउर नानक
फासी गलि परी ॥ ३८ ॥
तीरथ बरत अरु दान करि मन मै
धरै गुमानु ॥
नानक निहफलु जात तिह जिउ
कुंचर इसनानु ॥ ४६ ॥
रामु गइओ रावनु गइओ जा कउ
बहु परवारु ॥
कहु नानक थिरु कछु नही सुपने
जिउ संसारु ॥ ५० ॥
चिंता ता की कीजीऐ जो
अनहोनी होइ ॥
इहु मारगु संसार को नानक थिरु
नही कोइ ॥ ५१ ॥
जो उपजिओ सो बिनसि है परो
आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले
छाडिसगल जंजाल ॥ ५२ ॥
दोहरा ॥
बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न
होत उपाइ॥
कहुनानक अब ओट हरि गज
जिउ होहु सहाइ ॥ ५३ ॥
बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु
होतु उपाइ ॥
नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै
तुम ही होत सहाइ ॥ ५४ ॥
(1426)

सिमरन की जगह कुछ ओर ही (भाव, माया ही माया) मांगता रहता है, परन्तु भगवान की मर्जी में ओर की ओर ही हो जाती है। (मनुष्य ओरों को) ठगने की सोचें सोचता है (ऊपर से मौत का फन्दा) आकर गले में पड़ जाता है ।38। नानक कहते हैं, हे भाई परमात्मा का भजन छोड़कर मनुष्य तीर्थ स्नान करके, व्रत रखकर, दान पुण्य करके अपने मन में अहंकार करता है कि मैं धर्मी बन गया हूँ, परन्तु उसके यह सारे किये हुए कर्म ऐसे व्यर्थ चले जाते हैं जिस तरह हाथी का किया हुआ स्नान (हाथी नहा कर धूल मिट्टी अपने ऊपर डाल लेता है) ।46। नानक कहते हैं (हे भाई ! श्री)-राम (चन्द्र)चले गए, रावण भी चले गए, जो बड़े परिवार वाले कहलाते थे वह भी चले गए है (यहां) कोई भी सदा स्थिर रहने वाला नहीं है। यह संसार सपने के समान ही है ।50। नानक कहते हैं, उस घटना की चिन्ता करनी चाहिए जो घटना अनहोनी हो। जगत की तो चाल ही यही है कि यहां कोई भी जीव हमेशा स्थिर रहने वाला नहीं है ।51। नानक कहते हैं, संसार में तो जिसने भी जन्म लिया है वह अवश्य नष्ट हो जाएगा हर कोई यहां आज या कल नष्ट हो जाने वाला है। इसलिए माया के लालच के सभी फंदे उतार कर परमात्मा का गुणगान किया कर ।52। मेरी आत्मिक शक्ति समाप्त हो गई है, अब तो रास्ता नहीं निकल सकता। नानक कहते हैं, अब केवल उस परमात्मा का ही सहारा है, वही सहायता करेगा, जैसे हाथी की थी ।53। अब आत्मिक शक्ति मेरे में आ गई है। संसारिक मोह की जंज़ीरें अब टूट गई हैं इस लिये अब सभी उपाय हो सकते हैं। नानक कहते हैं, हे प्रभु तेरे हाथ में सब कुछ है अब तुम ही सहायता करोगे ।54।

पड़िआ मूरखु आखीऐ जिसु लबु लोभु अहंकारा ॥

गुरू नानक (१४०)

अरदास ॥

तुधु आगै अरदासि हमारी जीउ पिंडु सभु तेरा ॥
कहु नानक सभ तेरी वडिआई कोई नाउ न जाणै मेरा ॥(383)

तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि॥
जीउ पिंडु सभु तेरी रासि
तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥
तुमरी कृपा महि सूख घनेरे ॥
कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥
ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥
सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥
तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥
तुमरी गति मिति तुम ही जानी
॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥
८ ॥ (268)

अर्थ : हे प्रभु तू मालिक है हम जीवों की प्रार्थना तेरे आगे ही है, ये जिन्दगी व शरीर जो तूने हमें दिया है सब तेरी ही बख्शिश है। तुम हमारे माता-पिता हो, हम आपके बालक हैं, आपकी दया भरी नज़र में सर्व सुख है। कोई आपका अंत नहीं पा सका क्योंकि तू सब से ऊंचा भगवान है। जगत में सारे पदार्थ तेरे ही हुक्म से टिके हुए हैं, तेरी रची हुई सृष्टि तेरी ही आज्ञा से चल रही है। तू कैसा है और कितना बड़ा है ये तो तू स्वयं ही जानता है। नानक कहते हैं-हे प्रभु तेरे सेवक तुझ से सदा कुर्बान जाते हैं ।8।

पृथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥फिर अंगद गुर ते अमरदास राम दासै होईं सहाइ ॥अरजन हरिगोबिंद नो सिमरो स्री हरिराइ ॥स्री हरिकृशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ ॥सभ थाईं होइ सहाइ ॥ दसवें पातशाह स्री गुरू गोबिंद सिंघ साहिब जी महाराज सभ थाईं होइ सहाइ ॥दसाँ पातशाहीआँ जी दी जोत स्री गुरू ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरू ॥.........

नानाक नाम चड़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला ॥

बोले सो निहाल, सति स्री अकाल ॥

आदि पुरखु सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जीउ ॥
(1402)

सतिनाम वाहिगुरू

न हम हिंदु न मुस्लमान

अर्थ : न तो मुझे हिन्दुओं के व्रतों में आश्रय है और ना ही रमजान के महीने में रखे हुए रोजों में। मैं तो (केवल) उस परमात्मा का स्मरण करता हूँ जो अंत में (हर जीव की) रक्षा करता है ।1। मैं न तो काबे में हज करने जाता हूँ, न मैं हिन्दुओं की तरह तीर्थों का भ्रमण अथवा पूजा करता हूँ । मैं तो केवल एक ईश्वर का नाम लेने को ही उसकी सच्ची सेवा समझता हूँ ।2। न तो मैं पूजा और न ही नमाजें अदा करता हूँ । मैं तो उस निरंकार ईश्वर को दिल में बसा कर उस ही के सामने नमस्कार करता हूँ ।3। न तो हम हिन्दू हैं और न ही मुस्लमान । वह ईश्वर तो हमारे शरीर के कण-कण में व्याप्त है । जिस को (मुस्लमान) अल्लाह और (हिन्दू) राम कहकर पुकारते हैं ।

कादी, ब्राह्मण और जोगी

अर्थ : काजी (अगर एक तरफ इस्लामी धर्म का नेता है तो दूसरी तरफ हाकम भी है, रिश्वत की खातिर शर्रीयत कानून बारे) झूठ बोल कर रिश्वत खाता है, ब्राह्मण करोड़ों शूद्र कहलाते आदमियों को दुखी कर-कर के तीर्थ-स्नान भी करता है । जोगी भी अंधा है और जीवन का तरीका नहीं जानता । (यह तीनों अपनी तरफ से धर्म-नेता हैं, पर) इन तीनों के अंदर आत्मिक जीवन की तरफ से खोखलापन है ।

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ

अर्थ : हे भाई ! कोई उसे राम राम, कोई उसे 'खुदाए खुदाए' कहके पुकारता है । कोई मनुष्य उसको गोसाई बुला कर उसकी भक्ति करता है, कोई 'अल्ला' बुलाकर बंदगी करता है ।1। हे सारे जगत के मूल! हे कृपालू! हे रहम करने वाले, जीवों ने अपनी विभिन्न धर्म पुस्तकों में अपनी विभिन्न भाषाओं अथवा बोलियों में तेरे विभिन्न नाम रखे हुए हैं परन्तु तू सब जीवों के लिए एक जैसा ही है। रहाओ। कोई किसी तीर्थस्थल पर स्नान करता है, कोई हज करने के लिए जाता है । कोई मनुष्य प्रभु या अपने इष्ट की मूर्ति बना कर पूजा करता है, कोई नमाज पढ़ता है ।2। कोई वेद आदि धर्म पुस्तक पढ़ता है, कोई कुरान आदि पढ़ता है, कोई श्वेत वस्त्र धारण करता है ।3। कोई मनुष्य कहता है 'मैं मुस्लमान हूँ, कोई कहते हैं 'मैं हिन्दू हूँ' कोई मनुष्य बहिश्त मांगता है, कोई स्वर्ग मांगता हैं । इसलिए हे नानक! जिस मनुष्य ने परमात्मा का हुक्म पहचान लिया है उस ने प्रभु का भेद पा लिया है ।5।

गुरू ग्रंथ साहिब के शबदों मे गुरू कौन थे

जोति रूपि हरि आपि गुरू नानकु कहायओ ॥ ता ते अंगद भयओ तत सिउ ततु मिलाएयु ॥ (1408)

अर्थ : हरी की अपनी ज्योति जिस शरीर में आई उस का नाम गुरु नानक था । उसी के एक-एक तत्व से मिलता हुआ शरीर अंगद बन गया ।

आपि नाराइिण कला धारि जग महि परवरिअु । निरंकारि आकार जोति जग मंडलि करिअउ ।(1395)

अर्थ : गुरु अमरदास के शरीर में निराकार की आकार ज्योति पहुँची ।

तू सतिगुर चहु जुगी आपि आपे परमेसर ॥(1406)

अर्थ : चारों जुगों के परमेशवर, तूँ सतगुरु(रामदास) के रुप में हो ।

भंन मथुरा कछ भेदु नहीं गुर अरजुनु परतखि हरि ॥(1409)

अर्थ : गुरु अरजन साक्षात रुप में परमात्मा हैं ।

	गुरियाई मिलने के समय आयु	गुरियाई के वर्ष
गुरू नानक देव जी	जनम से	1469 - 1539
गुरू अंगद देव जी	35 साल	1539 - 1552
गुरू अमरदास जी	73 साल	1552 - 1574
गुरू रामदास जी	40 साल	1574 - 1581
गुरू अरजन देव जी	18 साल	1581 - 1606
गुरू हरगोबिंद जी	11 साल	1606 - 1644
गुरू हरिराइि जी	14 साल	1644 - 1661
गुरू हरिकिशन जी	5 साल	1661 - 1664
गुरू तेगबहादर जी	43 साल	1664 - 1675
गुरू गोबिंद सिंघ जी	9 साल	1675 - 1708
गुरू ग्रंथ साहिब		1708-सदीवकाल

गुरू गोबिन्द सिंघ जी की पहाड़ी राजाओं को अमृतधारी खालसा बनने की अपील :

आनन्दपुर साहिब में १६९९ की बैसाखी का आँखो देखा हाल जो औरंगजेब के जासूस ने दिल्ली भेजा, में से गुरू गोबिन्द सिघं जी की पहाड़ी राजाओं को अपील का अंश:
(दि सिख रिलिजन : मैकालिफ भाग पांचवां, पन्ना १००-१०१)

गुरू साहिब ने इकट्ठे हुए पहाड़ी राजाओं को कहा :

"तुम्हारी धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक अवस्था में कितनी गिरावट आ चुकी है। तुमने एक ईश्वर की भक्ति छोड़ दी है और उसकी जगह देवते, देवियां, नदियां, वृक्षों आदि की पूजा कर रहे हो ।

अज्ञानता के कारण तुम्हें अपनी रियासतों का राज्य प्रबन्ध भी ठीक तरह से करना नहीं आता । सुस्ती, व्यभिचार और विकारों में डूबने के कारण तुम अपनी प्रजा की भलाई की तरफ ध्यान नहीं देते । तुम्हारे बड़े अफसर एक तरफ तुम्हारी प्रजा को तंग करते हैं और दूसरी तरफ तुमसे घ्रणा करते हैं । और तुम्हारी जान के दुश्मन बने रहते हैं । जात पात के झगड़े इतने बढ गए हैं कि पुरातन हिन्दू समाज की चार वरणों की जगह अब तुम्हारा समाज सैंकड़ों छोटी-छोटी जातियों में बंट गया है । तुम एक दूसरे को नीचा समझ कर आपस में नफरत करते हो और तंगदिली के कारण पक्षपात का प्रयोग करते हो । तुम्हारा सदाचार इतना प्रदूषित हो चुका है कि तुम अपने मुस्लिम हाकिमों की खुशी प्रापत करने के लिऐ अपनी बेटियाँ उनको देते हो। स्वाभिमान तुम्हारी सोच से बिल्कुल खत्म हो गया है । और तुम अपना गौरव भूल गए हो । मुझे तुम्हारी मानसिक और व्यवहारिक गिरावट की बहुत चिन्ता है । तुम कितने बेशर्म और बेहया हो गए हो और कहाँ के राजपूत हो कि तुम्हारी नजरों के सामने मुस्लमान तुम्हारी बहू बेटियों को उठा कर ले जाते हैं। तुम्हारे मन्दिर तोड कर उनकी जगह मस्जिदें बनाते हैं और लोगों को जबरदसती मुसलमान बनाते हैं ।

अगर तुम में अभी कोई पुराने गौरव की मर्यादा का अंश बाकी है तो तुम मेरी बात मान कर खालसे बन जाओ और अपने देश की गिरी हुई अवस्था को ऊंचा करो ।

राजा अजमेर चन्द जो हिन्दू राजाओं की अगवाई कर रहे थे ने कहा कि, "हमारे लिए खालसा धर्म अपनाने में बहुत कठिनाईयां हैं । सब वर्गों के लोग इकट्ठे किस तरह भोजन कर सकते हैं । अगर हमने आप की बात मान ली तो सब वर्ण खत्म हो जायेंगे । तुम हर समय केशाधारी रहने को कहते हो परन्तु हमारी रीति के अनुसार घर में मृत्यु उपरान्त हम मुण्डन करवाते हैं" । यह कहते हुऐ सब राजे खडे हो कर चल दिए और उन्हों ने खालसा बनना स्वीकार नहीं किया ।

(291)

स्री मुखवाक पातशाही १० ॥

जागत जोति जपै निस बासुर एक बिना मन नैक न आनै ॥
पूरन प्रेम प्रतीत सजै ब्रत गोर मड़ी मत भूल न मानै ॥
तीरथ दान दइिआ तप संजम एक बिना नहि एक पछानै ॥
पूरन जोत जगै घट मै तब खालस ताहिनि खालस जानै ॥
(३३ सव्ये)

खालसा महिमा

अकाल पुरख की देह मों कोटिक बिसन महेस ॥
कोटि इंद्र ब्रहमा किते रवि ससि कोटि जलेस ॥

(291)

खालसा मेरो रूप है खास ॥ खालसे महि हौ करौ निवास ॥
खालसा मेरो मुख है अंगा ॥ खालसे के हौं सद सद संगा ॥
खालसा अकाल पुरख की फौज ॥ प्रगटिओ खालसा परमातम की मौज ॥
जब लग खालसा रहे निआरा ॥ तब लग तेज दीओ मै सारा ॥
जब ऐह गहे बिपरन की रीत ॥ मै न करों इन की परतीत ॥

सुया ॥

(294)

जुध जिते इन ही के प्रसाद ॥ इनही के प्रसाद सू दान करे ॥
अघ अऊघ टरे इनही के प्रसाद ॥ इनही की किरपा फुन धाम भरे ॥
इनही के प्रसाद सू बिदिआ लई ॥ इनही की किरपा सभ सतरू मरे ॥
इनही की किरपा के सजे हम हैं, नहीं मो से गरीब करोर परे ॥२॥

(294)

सेव करी इन ही की भावत अउर की सेव सुहात न जीको ॥
दान दयो इन ही को भलो ओर आन को दान न लागत नीको ॥
आगै फलै इनही को दयो जग मैं जसु अउर दयो सभ फीको ॥
मो ग्रहि मै तन ते मन ते, सिर लउ धन है सभ ही इन ही को ॥३॥

ना हम हिन्दू ना मुसलमान

वरत न रहउ न मह रमदाना ॥ तिसु सेवी जो रखै निदाना ॥१॥

एकु गुसाई अलहु मेरा ॥ हिंदू तुरक दुहाँ नेबेरा ॥१॥रहाउ॥

हज काबै जाउ न तीरथ पूजा ॥ एको सेवी अवरु न दूजा ॥२॥

पूजा करउ न निवाज गुजारउ ॥ एक निरंकार ले रिदै नमसकारउ ॥३॥

ना हम हिंदू न मुसलमान ॥ अलह राम के पिंडु परान ॥४॥

(1136)

काटी कूड़ु बोलि मलु खाइ ॥
ब्राहमणु नावै जीआ घाइ ॥
जोगी जुगति न जाणै अंधु ॥
तीने ओजाड़े का बंधु ॥

(662)

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ

कोई बोलै राम राम कोई खुदाइ ॥ कोई सेवै गुसईआ कोई अलाहि ॥ १ ॥
कारण करण करीम ॥ किरपा धारि रहीम ॥ १ ॥ रहाउ ॥
कोई नावै तीरथि कोई हज जाइ ॥ कोई करै पूजा कोई सिरुनिवाइ ॥ २ ॥
कोई पड़ै बेद कोई कतेब ॥ कोई ओढै नील कोई सुपेद ॥ ३ ॥
कोई कहै तुरकु कोई कहै हिंदू ॥ कोई बाछै भिसतु कोई सुरगिंदू ॥ ४ ॥
कहु नानक जिनि हुकमु पछाता ॥ प्रभ साहिब का तिनि भेदु जाता ॥ ५ ॥

(885)